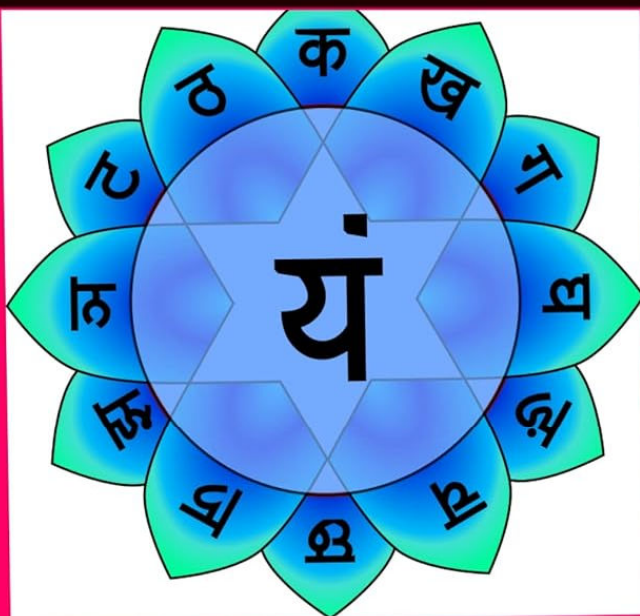


RAJ KUMAR



वर्ण मन्त्र

कुंडलिनी चक्र के बीज मन्त्र

वर्ण मन्त्र

कुंडलिनी चक्र के वर्ण मन्त्र

लेखक राज कुमार

इस पुस्तक में कुंडलिनी चक्र दल के वर्ण मन्त्र का वर्णन किया गया । किस वर्ण में कौन सी शक्ति हैं , उस शक्ति का संक्षिप्त में वर्णन किया गया हैं । किसी भी वर्ण को सिद्ध करके ,उस वर्ण से सम्बन्धित चक्र दल को सक्रिय किया जा सकता और उस दल सम्बन्धित किसी भी इच्छा को पूरा करने के लिए कैसे उपयोग किया जा सकता हैं । इसका भी वर्णन किया गया हैं ।

सभी मन्त्र शक्तिशाली होती हैं और इच्छापूर्ति में समर्थ हैं, परन्तु सफलता या असफलता के पीछे साधक का विवेक

, श्रद्धा व विश्वास मुख्य रूप से प्रभावक
रहती हैं । अतः मंत्र साधना की सफलता
- असफलता के प्रति प्रकाशक या लेखक
किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं हैं ।
अतः उनके सम्बन्ध में किसी भी प्रकार
की आलोचना या आपत्ति इस पुस्तक के
लेखक को मान्य नहीं होगा ।

Date : 20/10/2021

लेखक : राज कुमार



लेखक : राज कुमार

आध्यात्मिक सलाहकार और मंत्र साधक

अक्षर मन्त्र तन्त्र यन्त्र

दिल्ली - भारत

फ़ोन : +91-9213816442

.....

मेरे बारे में

मुझे बचपन से ही मंत्र का शोक रहा है ।

इसलिए मंत्र विद्या को समझने के लिए

कई जानकार लोगों के संपर्क में आया ।

लेकिन मंत्र को सही तरीके से समझने में

मुझे मेरे स्कूल के एक मित्र ने और मेरे

परिवार का विशेष सहयोग रहा है ।

उन्होंने मुझे मंत्र व ध्यान के आधारिक

स्तर की कई जानकारी दी साथ ही

आभ्यास भी करवाया ।

विशेष व्यक्ति के रूप में मुझे गुरुदेव

मिले , जिनकी जानकारी मुझे मेरे भाई

साहब से ही मिली थी । कई महीने के

कोशिश के बाद मुझे गुरुजी से मिलने का मौका मिला और मन्त्र दीक्षा को प्राप्त किया ।

गुरुजी से कई मन्त्र दीक्षा लेकर मन्त्र अभ्यास के बाद ,मैंने गुरुजी से मन्त्र ज्ञान को समाज में प्रसारित करने की अनुमति माँगी तो उन्होंने मुझे उनके नाम का उपयोग न करते हुए समाज में अपनी पहचान बनाने की अनुमति दी । जिसे के बाद मैंने " अक्षर मन्त्र तन्त्र यन्त्र " को शुरू किया और कई लोगों को मंत्र की शिक्षा व दीक्षा भी दी ।

आज covid 19 के कारण सारा विश्व बंद हैं ओर मेरा अभियान रुकता नजर आ रहा हैं | तब मैंने गुरु साधना के माध्यम से गुरुदेव से संपर्क कर मन की व्यथा बताया तो गुरुजी ने कहा अब तुम अपने ज्ञान को पुस्तक के रूप में बदल कर समाज को मन्त्र का ज्ञान दे सकते हो |

इसलिए मैंने लेखन शुरू की , अब, मैं पुस्तकों के माध्यम से अपने ज्ञान और अनुभव को साझा करके अपने जन - कल्याण के लिए अपने प्रयास जारी रख रहा हूँ।

लेखक : राज कुमार

आरंभ

किसी भी वस्तु के हिलने से हवा में एक गति उत्पन्न होती है । इस गति को त्वरण कहते हैं । गति के अनुसार त्वरण के आकार व बनावट की रचना होती है । त्वरण के आकार व बनावट को हम सुनते हैं । इसी को हमारे पूर्वजों ने भिन्न-भिन्न प्रतीक में उल्लेखित किया है । उन्ही प्रतीक को हम वर्ण कहते हैं । हमारे पूर्वजों (सिद्ध साधक व ज्ञानी व्यक्ति)ने इन पर गहन अध्ययन करने के बाद उन्होंने वर्णों का अर्थ व उपयोग समाज में प्रस्तुत किया । इन्ही वर्णों से भाषा

और लिपि का निर्माण हुआ हैं ।

जनसामान्य इन्ही वर्ण से शब्द , वाक्य का उपयोग करके अपने विचार एक दूसरे को व्यक्त करते हैं ।

शब्दों से उत्पन्न ऊर्जा से दूसरे व्यक्ति के दिल ओर दिमाग पर प्रभाव होता हैं ।

इसका प्रभाव आप व्यक्ति के चहरे पर भी देख सकते हैं ।

यह प्रभाव धीरे - धीरे बढ़ते हुए हमारे जीवन पर भी देखने लगता हैं । दूसरे शब्दों कहा जाये तो यही कम्पन हमारी इच्छों को पूरा करती हैं ।

मन्त्र शक्ति कैसे काम करती हैं।

जैसा आप जानते ही हैं कि हम पाँच तत्वों से बने हुए हैं। वह तत्व इस प्रकार है पृथ्वी , अग्नि , वायु , जल और आकाश (आकाशीय विद्युत ऊर्जा) । इन पाँच तत्वों के सही अनुपात के होने से हम सेहतमंद और

खुशहाल रहते हैं । इनके अनुपात में कमी आने से शरीर में भिन्न-भिन्न प्रकार के रोगों होने का अंदेशा होता है साथ ही हमारी सफलता के मार्ग भी अवरुद्ध हो जाते हैं ।

हालांकि हमारा शरीर ब्रह्मांड से लगातार विद्युत ऊर्जा ग्रहण करता रहता हैं लेकिन हमारे दैनिक कार्य और झूठे आचरण के कारण ,इस ऊर्जा का खपत ग्रहण की गई ऊर्जा के अनुपात से ज्यादा होता हैं |जिस कारण वश शरीर में इस ऊर्जा की कमी होती हैं | जिस कारण हमारी इच्छा शक्ति और शारीरिक शक्ति भी कमजोर हो जाती हैं | इस ऊर्जा की पूर्ति के लिए ध्यान और मन्त्र जप विधान बताया गया हैं |

मन्त्र जप या ध्यान के माध्यम से आकाशीय विद्युत ऊर्जा को सही अनुपात

मैं अपनी ओर आकर्षित करके व ग्रहण करके अपनी शारीरिक व मानसिक शक्ति का विकास करके , अपनी सभी इच्छापूर्ति करते हुए सुखद जीवन व्यतीत कर सकते हैं ।

आकाशीय ऊर्जा के सही अनुपात में ग्रहण करके ओर संग्रहीत करने से हमारे शरीर में उपस्थित कुंडलिनी चक्रों को बल मिलता है । यही संग्रहीत ऊर्जा धीरे-धीरे सुप्त पड़ी नाड़ी और चक्रों को सक्रिय कर के पूर्ण रूप से चक्रों को जागृत करती है । इन कुंडलिनी चक्रों की संख्या 7 बताई गई है । यह चक्र शरीर के अलग - अलग

स्थान पर प्रकृति द्वारा स्थापित किया गया हैं ।

यह सात चक्र इस प्रकार हैं :

1. मूलाधार
2. स्वाधिष्ठान
3. मणिपुर
4. अनाहत
5. विशुद्धि
6. आज्ञा
7. सहस्रहार

कुंडलिनी चक्र दल

हर चक्र में कमल के सम्मान दिखने वाले दल हैं | यह दल हमारी इन्डा ,पिंगला और सुषुमन्न नाड़ी से वने वलय से बनाता हैं |हर चक्र में अलग - अलग संख्या में कमल दल होते हैं |

मूलाधार चक्र

यह चक्र पुरुषों के मेरुदंड के सबसे नीचे की तिकोनी हड्डी में स्थित होती हैं | महिलाओ में यह डिंबाशय के मध्य में स्थित होती हैं |यह चक्र पृथ्वी तत्व का प्रतीक हैं | इसके चार दल हैं | इसक रंग

पीला होता हैं | इसका मूल मन्त्र " लं "

हैं |

इसके चार दलों के बीज मन्त्र वं ,शं ,षं ,सं |

इस चक्र के ठीक से काम न करने पर शरीर में उदासी ,जड़ता,भारीपन तट हड्डी से सम्बन्धित रोग हो सकते हैं | इस चक्र का देवता गणपति हैं|

स्वाधिष्ठान चक्र

यह चक्र जल तत्व प्रधान हैं | इसका स्थान लिंग मूल के पीछे हैं | इसका रंग मलिन सफेद रंग का होता हैं | इसमे छः

दल होते हैं । इस चक्र के जागरण से काम वासना को नियंत्रित किया जा सकता है । इसके जागृत होने से कफ ,खाँसी ,श्वास तट मूत्र रोग को रोक सकते हैं । इसका मूल मन्त्र "वं " हैं । इसके छः दलों का मन्त्र वं,भं ,मं ,यं ,रं ,लं । इस चक्र के देवता ब्रह्मा हैं ।

मणिपुर चक्र

यह चक्र नाभि स्थल के सामने स्थित होता है । यह अग्नि तत्व प्रधान चक्र है । इस का रंग लालिमा लिया हुआ पीला है । इसके जागरण से आमाशय

,जिगर,पित्ताशय ,पाचन तथा पेट
सम्बन्धित रोगों का नाश होता हैं | इसके
दस दल होते हैं | इस दस दलों के बीज
मन्त्र 'डं ,ढं ,णं ,तं,थं ,दं ,धं ,नं ,पं ,फं
| इस चक्र का मूल मन्त्र " रं " हैं और
इसका देवता विष्णु हैं |

अनाहत चक्र

यह चक्र हृदय के समीप होता हैं | यह
चक्र आध्यात्मिक विकास का प्रतीक हैं
और आत्मा का परमब्रह्म से मिलने की
पहला पड़ाव हैं | यह चक्र वायु तत्व
प्रधान हैं और इसका रंग लाल होता है |

इसके जागरण से हृदय , फेफड़े , रक्त प्रवाह से सम्बन्धित रोगों का नाश होता हैं | साथ-ही-साथ सम्मोहन शक्ति और दूसरों की मन की बात जाने की शक्ति भी प्राप्त हो जाती हैं | इसमे बारह दल होते हैं | इस बारह दलों का बीज मन्त्र कं ,खं ,गं ,घं ,ङं ,चं ,छं ,जं ,झं ,ञ,टं ,ठं | इसका मूल मन्त्र " यं "हैं | इसकी देवी लक्ष्मी हैं |

विशुद्ध चक्र

इस चक्र के जागरण से व्यक्ति की आत्मा पूरे ब्रह्मांड से जुड़ जाता हैं | यह

चक्र कण्ठ प्रदेश के करीब होती हैं। यह
आकाश तत्त्व प्रधान हैं । इसका रंग
आसमानी हैं । इसके जाग्रत होने से
थायराइड ,गला ,फेफड़ा ,हृदय ,जिगर,रक्त
प्रवाह को नियंत्रित करती हैं । इसके साथ-
ही-साथ पूर्ण ध्यान की प्राप्ति ,इच्छा
मृत्यु और वाक सिद्धि प्राप्त होती हैं ।
इसमे सोलह दल होते हैं और इनका बीज
मन्त्र हैं अं ,आं ,इं,ईं ,उं ,ऊं ,ऋ ,ॠ:
,लृ', 'लृ ,एं ,ऐं ,ओं ,औं ,अं, अः । इस
चक्र का मूल बीज मन्त्र " हं " हैं । इस
चक्र की देवी सरस्वती हैं ।

आज्ञा चक्र

यह चक्र दोनों भौहों के मध्य स्थित होता हैं | यह चक्र चम्पा के रंग जैसा सफेद दो दल का होता हैं | इस के जागरण से आँखों में तेज बढती हैं | इस चक्र से प्राप्त सिद्धि से दूसरों को भी अपने समान सिद्धहस्त बनाया जा सकता हैं | इसके दो दलों का बीज मन्त्र हैं "हं " और "क्षं "| इसका मूल मन्त्र "नं " हैं | इसकी देवी महाकाली और शिव हैं |

सहस्र हार चक्र

यह चक्र मस्तिष्क में स्थित होता हैं ।
जहाँ शिखा का मूल होता हैं । जब यह
जागृत होता हैं तो अमृत की झरना जैसा
फूट पड़ता हैं । इस चक्र में हजारों दल
होते हैं । इनका गणना करना असंभव
लगता हैं । यह चक्र परब्रह्म प्रधान हैं ।
इसका मूल बीज मन्त्र " ॐ " हैं ।
इसका रंग हल्की सुनहरी रंग की आभा
फूटती नजर आती हैं । इसके जागरण से
साधक अपने इच्छानुसार अपने व दूसरों
के जीवन में कुछ भी परिवर्तन करने की
क्षमता को प्राप्त करता हैं । इसी से
मानव को अष्टसिद्धि और नवनिधि की

प्राप्ति होती हैं । इस चक्र के जागरण के
बाद साधक को मोक्ष की प्राप्ति संभव है
।

कुंडलिनी जागरण के लाभ

साधक द्वारा साधना करने पर चक्र जागरण निश्चित होता है | चक्र जागरण का अनुभव न होने पर साधक में अविश्वास और निराशपन उत्पन्न हो सकता है | इसलिए साधक को चक्र जागरण के लाभ का ज्ञान हो तो उसे जल्द ही पता चल जाएगा की चक्र जागरण हो रहा है | इस अनुभव को महसूस करने के बाद साधक साधना ओर जोर-शोर से करेगा |

चक्र जागरण के लाभ की जानकारी संक्षेप दिया जा रहा है :

मूलाधार चक्र

मूलाधार चक्र के जागरण होने से पूर्व एक झटका सा अनुभव होता है | इससे पहले रीढ़ की हड्डी के मूल में गुद गुदी और झंझनट भी अनुभव होती है | इस चक्र के सक्रिय होने के बाद साधक अपने आपको मानसिक रूप से सुन्दर, हास्य व तनाव मुक्त महसूस करता है |

स्वाधिष्ठान चक्र

यह चक्र कुण्डलिनी चक्र यात्रा का सबसे कठिन पड़ाव है | इसके जागरण से पूर्व साधक में अत्यधिक मात्रा में काम -

वासना की तीव्रता बढ़ती हैं । यदि इसको नियंत्रित न किया जाए तो साधक पतन भी हो सकता है । इसके जागरण के समय गुप्त अंग में झंझनट और भारीपन अनुभव होता है । ठीक गुप्त के सामने रीढ़ के हड्डी में कुछ खिचाव और गरमहट भी अनुभव होती है । साथ-ही-सहट सिंदूरी प्रकाश भी दिखाता है । इसके सक्रिय होने से साधक में आत्मनिर्भरता और निडरता प्राप्त होती है । किसी भी प्रकार के वाधा का समाधान करने का तरीका शीघ्र ही ज्ञात कर लेता है ।

मणिपुर चक्र

इस चक्र के सक्रिय होने पर साधक पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता हैं ।
साधक को भूख-प्यास पर पूर्ण रूप से नियंत्रित प लेता हैं । ऐसे साधक में पेड़-पौधों , पशु-पक्षी और अन्य के प्रति दया ,ममता,करुणा का उदय होने लगता हैं ।
इस चक्र के जागरण के समय पेट में काफी तेज ऐंठन, दर्द या खिचाव भी होता हैं । इसके जागरण के समय पीला प्रकाश का अनुभव होती हैं । हाथ-पैर में गरमहाट अनुभव होती हैं ।

अनाहत चक्र

अब तक जो तीन चक्र के बारे में बताया गया वो चक्र भौतिक जीवन से सम्बन्धित थे । अनाहत चक्र एक भावात्मक चक्र हैं । इसी चक्र के जागरण से इष्ट दर्शन होते हैं । इसके जागरण में साधक को धैर्य के साथ ही साधना करण चाहिये । इस चक्र के जागरण के समय हृदय प्रदेश में ऐसा अनुभव होता है जैसे की सुदर्शन चक्र घूम रहा हो । जिस प्रकार सिनेमा में दूर से रोशनी आती है ओर सामने पर्दे पर तस्वीर दिखती है । उसी तरह ऐसा लगता है जैसे कहीं दूर से गुलाबी रोशनी आ रही

हैं । इसे रोशनी में कई प्रकृति दृश्य
दिखते हैं । यह दृश्य आपके ईष्ट के
अनुसार भी हो सकता है । यदि ईष्ट
कृष्ण हो तो पेड़ पौधे , नदी,गाय ,झूले
दिखते हैं । यदि ईष्ट लक्ष्मी हो तो नदी
,सुन्दर वन ,हाथी ,पुष्प दिख सकते हैं ।
इन्ही दृश्य मैनापके ईष्ट के दर्शन होते हैं
। कई साधकों का ईष्ट दर्शन मात्र से
ध्यान टूट जाता है । ये ध्यान का टूटना
आपकी यात्रा को बाधित कर सकता है ।
इसलिए पूर्ण रूप से धैर्य पूर्वक ध्यान
साधना करना चाहिये । यदि दर्शन हो तो
मात्र दर्शक बनकर देखे ओर देखते रहे

जब तक ईष्ट आपसे बातचीत न करें ।
यह चक्र परमब्रह्म के मिलन का प्रथम
पड़ाव हैं ।

विशुद्ध चक्र

अब आगे के तीन चक्र आध्यात्मिक सिद्धि
देने वाले चक्र हैं । विशुद्ध चक्र से कई
विशिष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं । उन
सिद्धियों में से कुछ इस प्रकार हैं :-
वाणी सिद्धि ,ज्योतिष ,लेखन प्रतिभा
,संगीत ,हृदय की धड़कन अपने अनुसार
नियंत्रित करना ,आध्यात्मिक ज्ञान ,आदि
। इस चक्र के जागरण के समय ही ब्रह्म

नाद की ध्वनि अनुभव होता हैं | यह
ध्वनि वाए तरफ से सुनाई देती हैं | इसे
अध ब्रह्म नाद भी कहे सकते हैं | कभी
कभी कई तरह के संगीत व स्वर सुनने
को मिलता हैं | इस चक्र के जागरण के
समय हल्की नीली रोशनी के साथ
आसमान और कई देवी-देवता के भी
दर्शन हो सकते हैं |

आज्ञा चक्र

यह चक्र कुण्डलिनी यात्रा का एक
महत्वपूर्ण पड़ाव हैं | इस चक्र के जागरण
से दो प्रमुख सिद्धि प्राप्त होती हैं | यह

सिद्धि अपने आपमे सभी सिद्धियों में
महत्वपूर्ण हैं । इस चक्र से साधक किसी
वस्तु को पलभर में भस्म कर सकता हैं
तो दूसरे ही पल उसे एक नया रूप दे
सकता हैं । इसी चक्र से साधक किसी को
भी कोई भी सिद्धि प्रदान कर सकता हैं ।
इसके जागरण के समय अत्यधिक तेज
ब्रह्म नाद सुनने को मिलता हैं । इसके
साथ-साथ ऐसा भी अनुभव होता हैं जैसे
की चारों तरफ अग्नि बरसात हो रही हो
तो कभी ऐसा लगता हैं जैसे किसी
हिमशीला पर बैठा हुआ अनुभव होता हैं ।

सहस्र हार चक्र

यह चक्र समान्यतः अपने आप जागृत नहीं होती | यह केवल योग्य गुरु के सहयोग से ही संभव हो सकता है | इस चक्र के जागरण के बाद साधक देव तुल्य होकर विभिन्न सिद्धियों का स्वामी हो जाता है |

कुण्डलिनी जागरण के लिए मन्त्र

चक्र जागरण ध्यान के माध्यम से किया जा सकता है | ध्यान के साथ यदि मन्त्र साधना और योगासन को भी करें तो चक्र जागरण की सफलता में काफी तीव्रता आ जाती है |

कुण्डलिनी चक्र जागरण में कुछ सहायक योगासन के नाम दिया जा रहा है | जो साधक को रोज करना चाहिये | योगासन के नाम इस प्रकार हैं:

1. सैर करना
2. पाश्चात्तोआसन
3. पवनमुक्तासन

4. सिंहासन

5. सर्पासन

6. धनुरासन

7. सर्वानासन

8. शवासन

9. प्राणायाम |

साधक को योगासन के साथ-साथ मन्त्र

साधना भी करण चाहिये | हर चक्र के

लिए अलग अलग साधना करने से

कुण्डलिनी यात्रा का अनुभव कुछ आश्चर्य

जनक ही रहता हैं| यदि कोई साधक सभी

चक्र को सक्रिय न करना चाहे तो अपने

जरूरत के अनुसार कुछ चक्र या चक्र के
कुछ दल को सक्रिय कर सकता हैं ।

मन्त्र साधना के लिए मन्त्र इस प्रकार हैं:-

मूलाधार चक्र मन्त्र :

॥ ॐ लं परमतत्वाय गं ॐ फट ॥

स्वाधिष्ठान चक्र मन्त्र :

॥ ॐ वं वं स्वाधिष्ठान जाग्रय जाग्रय वं
वं ॐ फट ॥

मणिपुर चक्र मन्त्र :

॥ ॐ रं चक्र जागरणाय ब्रीम मणिपुराय रं
ॐ फट ॥

अनाहत चक्र मन्त्र :

॥ ॐ यं अनाहत जाग्रय जाग्रय श्रीं ॐ
फट ॥

विशुद्ध चक्र मन्त्र :

॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं विशुद्धाय फट ॥

आज्ञा चक्र मन्त्र :

॥ ॐ हं क्षं चक्र जागरणाय कालिकायै
फट ॥

सहस्रार चक्र मन्त्र :

॥ ॐ ह्रीं सहस्रार चक्र जाग्रय जाग्रय ऐं
ॐ फट ॥

प्रत्येक वर्ण का वर्गीकरण इस प्रकार हैं :

वायु वर्ग : अ ,आ ,ए ,क ,च ,ट ,त ,प
,य ,ष

अग्नि वर्ग : इ ,ई ,ऐ ,ख ,छ ,ठ ,थ ,फ,
र ,क्ष

भूमि वर्ग : उ ,ऊ ,अं,ग ,ज,ड ,द ,ब,ल

जल वर्ग : ऋ ,औ ,ध ,झ ,ढ ,घ ,भ ,व
,स

आकाश वर्ग : ङ, ञ, ण न, म, श, ह

मैत्री भाव

पृथ्वी वर्ग+जल वर्ग

अग्नि वर्ग+वायु वर्ग

पृथ्वी वर्ग+जल वर्ग

इसी प्रकार राशि वर्णों का उल्लेख भी है

मेष :अ, आ, इ, ई

वृष : उ ,ऊ, ऋ

मिथुन : ऋ, लु ,ल

कर्क : ए ,ऐ

सिंह : ओ, औ

कन्या : अं, अः, श, स, ष, ह, ळ

तुला : क ,ख, ग, घ, ङ

वृश्चिक :च, छ, ज, झ, ञ

धनु :ट, ठ,ड, ढ, ण

मकर :त, थ, द, ध, न

कुंभ : प, फ, ब ,भ ,म

मीन :य, र, ल, व,क्ष

वर्ण के ग्रह

सूर्य :स्वर वर्ग

मंगल :क वर्ग

शुक्र :च वर्ग

बुध : ट वर्ग

गुरु : त वर्ग

शनि :प वर्ग

चन्द्र:य वर्ग

वर्णों से संबंधित उनके नक्षत्रों :

अश्विनी :अ, आ

भरणी : इ

कृत्तिका:ई, उ, ऊ

रोहिणी : ऋ

मृगशिरा : ए

आर्द्रा : ऐ

पुनर्वसु : ओ , ओ

पुष्य : क

आश्लेषा : ख, ग

मघा : घ, ङ

पूर्वा फाल्गुणी : च

उत्तराफाल्गुनी : छ, ज

हस्त : झ

चित्रा : ट, ठ

स्वाती : ड

विशाखा : ढ , ण

अनुराधा :त, थ, द

ज्येष्ठा :ध

मूल :न, प, फ

पूर्वाषाढा :ब

उत्तराषाढा : भ

श्रवण : म

धनिष्ठा : य, र

शतभिषा :ल

पूर्वाभाद्रपद :व, श

उत्तराभाद्रपद :स, ष, ह, क्ष

रेवती :अं, अः ,ज, ळ

बीज मन्त्र में निहित शक्ति

अ(विशुद्ध) : सरस्वती सिद्धि

आ (विशुद्ध) : वाक सिद्धि

इ (विशुद्ध) : वरदान देने की शक्ति

ई (विशुद्ध) : आयुर्वेद ,ज्योतिष ज्ञान

उ (विशुद्ध) : भाषण देने की प्रतिभा

ऊ (विशुद्ध) : लेखन प्रतिभा का विकास

ऋ (विशुद्ध) : संगीत प्रतिभा का विकास

ए (विशुद्ध) : पदार्थ का सही उपयोग
करने का ज्ञान

ऐ (विशुद्ध) : परकाया प्रवेश सिद्धि

ओ(विशुद्ध) : ब्रह्म दर्शन सिद्धि

औ (विशुद्ध) : इच्छा मुत्त्यु सिद्धि

अं (विशुद्ध) : सौभाग्य लक्ष्मी सिद्धि

अः(विशुद्ध) : सम्मोहन सिद्धि

क (अनाहत) : गुप्त धन देखने की सिद्धि

ख (अनाहत) : तन्त्र वाधा को दूर करना

ग (अनाहत) : भूतकाल अनुमान लगाना

घ (अनाहत) : वर्तमान समय का पता

करना

डं (अनाहत) : भविष्य का अनुमान

लगाना

च (अनाहत) : काल ज्ञान

छ (अनाहत) : टेलीपैथी सिद्धि

ज (अनाहत) : रूप सज्जा की कला में
सफलता

झ (अनाहत) : ग्रहों का ज्ञान

ञ (अनाहत) : इष्ट के दर्शन प्राप्ति

ट (अनाहत) : शारीरिक कार्य क्षमता को
बढ़ाना

ठ (अनाहत) : ऊर्जा को परिवर्तित करना

ड (मणिपुर) : पेट के रोग को इलाज के
लिए

ढ (मणिपुर) : इच्छा शक्ति को बढ़ाने के
लिए

ण (मणिपुर) : उड़ते जीव को नियंत्रित
करना

त (मणिपुर) : जल यात्रा का योग

थ (मणिपुर) : गुप्त रहस्य का पता
लगाना

द (मणिपुर) : लंबी यात्रा का योग

ध (मणिपुर) : पशु-पक्षी के भाषा का ज्ञान

न (मणिपुर) : शरीर के तापमान को
नियंत्रित करना

प (मणिपुर) : नेतृत्व शक्ति का विकास

फ (मणिपुर) : एकाग्रता को बढ़ाने के
लिए

ब (स्वाधिष्ठान) : गृहस्थ लक्ष्मी के लिए

भ (स्वाधिष्ठान) : सन्तान प्राप्ति के लिए

म (स्वाधिष्ठान) : भय को कम करने के लिए

य (स्वाधिष्ठान) : काम शक्ति को नियंत्रित करने के लिए

र (स्वाधिष्ठान) : आकर्षण बढ़ाने के लिए और रोग मुक्त होने के लिए

ल (स्वाधिष्ठान) : भौतिक सुख की वृद्धि के लिए

व (मूलाधार) : प्राण शक्ति को बढ़ाने के लिए

श (मूलाधार) : मानसिक शक्ति को बढ़ाने के लिए

ष (मूलाधार) : भौतिक शक्ति

स (मूलाधार) : सुंदरता बढ़ाने के लिए
ह (आज्ञा) : विध्वंस करनी की शक्ति
क्ष (आज्ञा) : पुष्टिकारक शक्ति
ॐ (सहस्रत्रहर): पूर्ण सिद्धि के लिए

अन्य बीज मन्त्र

श्रीं : लक्ष्मी प्राप्ति के लिए

ह्रीं : आर्थिक उन्नति के लिए

ऐं : विद्या प्राप्ति के लिए

नं : पति -पत्नी के रिस्ते के लिए

ठं : शत्रु के लिए

वर्ण सिद्धि का तरीका

1. सर्वप्रथम अपने लक्ष्य को निश्चित करें | लक्ष्य के अनुसार चक्र दल या चक्र जागरण के लिय मन्त्र दीक्षा प्राप्त करें |

2. मन्त्र जाप के लिय समय निश्चित करें ।
3. मन्त्र साधना के लिए स्थान निश्चित करें । साधना के लिए हवादार और हल्के ठण्डे स्थान का उपयोग करना उचित होता हैं ।
4. मन्त्र से अभिमन्त्रित मन्त्र जाप माला का उपयोग करें । स्फटिक की माला अच्छी रहगी ।
5. अब पहले गुरु मन्त्र का जाप करें ।
गुरु मन्त्र रोज 5 माला जप करे ।
गुरु मन्त्र : ॐ ह्रीं गुरुभ्यो नमः।

6. अब चैतन्य मन्त्र 3 माला जाप करें
: ॐ ह्रीं मम प्राण देहि रोम
प्रतिरोम चैतन्यै जाग्रय ह्रीं ॐ नमः
|
7. अब दीपक पर , गुरु तस्वीर या
अपने ईष्ट के तस्वीर पर त्राटक
करते हुए ,चक्र दल का बीज मन्त्र
या चक्र का मूल मन्त्र का जप
अगले 90 मिनट रोज करें |
8. किसी भी वर्ण को सुवह रोज 90
मिनट जप करें तो 3 से 6 महीने
में उस बीज मन्त्र का फल मिलने
की संभावना होती हैं |

उपयोग करने के लिए बीज मन्त्र का जप
करते हुए आज्ञा चक्र पर या अपने इष्ट
के तस्वीर पर ध्यान करना चाहिये ।

कुंडलिनी जागरण क्यों करें

आध्यात्मिक क्षेत्र में छोटी - से - छोटी जानकारी रखने वाला व्यक्ति भी कुंडलिनी जागरण व कुंडलिनी रहस्य की जानकारी प्राप्त करने के लिए और इसे जागृत करने के लिए उत्सुक रहता है । कुंडलिनी जागरण अपने आप में एक सर्वोच्च सिद्धि है । कुंडलिनी जागरण के बाद अपने और अपने प्रियजन के जीवन में परिवर्तन करके पूर्ण अष्ट लक्ष्मी का भोग करने के लिए और अंत काल में मोक्ष सिद्धि के लिए करना चाहिये ।

॥समाप्त ॥

मन्त्र दीक्षा प्राप्त करना सौभाग्य की बात हैं | मन्त्र साधना में सफलता की पहले सीढ़ी होती हैं दीक्षा |

प्रमुख मन्त्र दीक्षा

1. गुरु दीक्षा - पहली दीक्षा से शिष्य बनना।
2. ज्ञान दीक्षा - असाधारण ज्ञान प्राप्त करने और प्रतिभा में वृद्धि करने के लिए।
3. जीवन मार्ग दीक्षा - जीवन को जीवंत बनाने के लिए।
4. शाम्भवी दीक्षा - "शिवत्व" प्राप्त कर "शिवमाया" प्राप्त करना।

5. चक्र जागरण दीक्षा - सभी "शत चक्रों" (छह चक्र) को जगाने की दीक्षा।

6. विद्या दीक्षा - एक साधारण बच्चे को बुद्धिमान प्राणी में बदलना।

7. शिष्याभिषेक दीक्षा - पूर्ण शिष्य बनने के लिए स्वयं का पूर्ण समर्पण।

8. आचार्याभिषेक दीक्षा - ज्ञान की समग्रता प्राप्त करने के लिए।

9. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा - सात चरणों वाली इस दीक्षा से असाधारण व्यक्तित्व प्राप्त किया जा सकता है।

10. गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा - गर्भ में संतान को प्रबुद्ध करने के लिए।

11. शक्तिपात युक्त कुंडलिनी जागरण दीक्षा - जीवन के "परम सत्य" को प्राप्त करने के लिए गुरु की तप-ऊर्जा को शिष्य के शरीर में स्थानांतरित करना।

12. कुण्डलिनी जागरण दीक्षा चित्र के द्वारा - कुण्डलिनी जागरण दीक्षा शिष्य के चित्र पर प्राप्त होती है।

13. धन्वंतरि दीक्षा - स्वास्थ्य की उत्तम स्थिति प्राप्त करने के लिए।

14. साबर दीक्षा - तांत्रिक साधना में सफलता पाने के लिए।

15. सम्मोहन दीक्षा - शरीर में असाधारण

आकर्षण प्राप्त करने के लिए।

16. संपूर्ण सम्मोहन दीक्षा - सभी को आकर्षित करने की कला प्राप्त करना।

17. महालक्ष्मी दीक्षा - धन लाभ और समृद्धि प्राप्त करने के लिए।

18. कनकधारा दीक्षा - धन के निरंतर प्रवाह के लिए दीक्षा।

19. अष्ट लक्ष्मी दीक्षा - असामान्य ऐश्वर्य प्राप्त करने वाली विशेष दीक्षा।

20. कुबेर दीक्षा - स्थायी रूप से धन और समृद्धि प्राप्त करने के लिए।

21. इंद्र वैभव दीक्षा - प्रसिद्धि और धन प्राप्त करने के लिए।

22. शत्रु संहारक दीक्षा - शत्रुओं पर विजय पाने के लिए।

23. अप्सरा दीक्षा - सिद्ध को (नियंत्रित करने के लिए) एक अप्सरा।

24. ऋण मुक्ति दीक्षा - कर्ज से मुक्ति पाने के लिए।

25. शतोपंथी दीक्षा - भगवान शिव की असाधारण शक्ति प्राप्त करने के लिए।

26. चैतन्य दीक्षा - एक दीक्षा शक्ति प्रदान करने और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

27. उर्वशी दीक्षा - यौवन प्राप्त करने और वृद्धावस्था से छुटकारा पाने के लिए।

28. सौंदर्योत्तमा दीक्षा - सौंदर्य बढ़ाने के लिए।

29. मेनका दीक्षा - जीवन में शारीरिक सफलता प्राप्त करने के लिए।

30. स्वर्णप्रभा यक्षिणी दीक्षा - अप्रत्याशित धन की प्राप्ति के लिए।

31. पूर्ण वैभव दीक्षा - सभी प्रकार के ऐश्वर्य और धन की प्राप्ति के लिए।

32. गंधर्व दीक्षा - संगीत में पूर्णता प्राप्त करने के लिए।

33. साधना दीक्षा - पिछले जन्म की साधना को इस जन्म से जोड़ने के लिए।

34. तंत्र दीक्षा - तांत्रिक साधनाओं में

सफलता पाने के लिए।

35. बगलामुखी दीक्षा - शत्रुओं पर विजय पाने के लिए।

36. रासेश्वरी दीक्षा - रसायन विज्ञान और पारा विज्ञान में पूर्णता प्राप्त करने के लिए।

37. अघोर दीक्षा - शिव साधनाओं में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए।

38. शिघ्र विवाह दीक्षा - शीघ्र विवाह के लिए।

39. सम्मोहन दीक्षा - तीन चरणों वाली एक महत्वपूर्ण दीक्षा।

40. वीर दीक्षा - वीर साधना करना।

41. सौंदर्य दीक्षा - दुर्लभ सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए।

42. जगदम्बा सिद्धि दीक्षा - देवी जगदम्बा को प्रसन्न करने के लिए।

43. ब्रह्म दीक्षा - दैवीय शक्तियों को प्राप्त करने के लिए।

44. स्वास्थ्य दीक्षा - रोगमुक्त स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए।

45. कर्ण पिशाचिनी दीक्षा - किसी व्यक्ति के अतीत और वर्तमान को जानने के लिए।

46. सर्प दीक्षा - सर्प दंश से मुक्ति और जीवन सुरक्षा के लिए।

47. नवर्ण दीक्षा - सिद्ध (नियंत्रण)

त्रिशक्ति (त्रिशक्ति) को।

48. गर्भस्थ शिशु कुंडलिनी जागरण दीक्षा

- गर्भ में संतान को एक अलौकिक के
संस्कार मिलते हैं।

49. चाक्षुषमती दीक्षा - आंखों की रोशनी

बढ़ाने के लिए।

50. काल ज्ञान दीक्षा - काल (काल) का

ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

51. तारा योगिनी दीक्षा - अप्रत्याशित

धन की प्राप्ति के लिए।

52. रोग निवारण दीक्षा - सभी रोगों से

मुक्ति पाने के लिए।

53. पूर्णतव दीक्षा - जीवन में समग्रता प्राप्त करने के लिए दीक्षा।

54. वायु दीक्षा - अपने आप को हवा की तरह हल्का बनाने के लिए।

55. क्रिया दीक्षा - किसी को पूरी तरह से बर्बाद करने के लिए सिद्धि प्राप्त करना।

56. भूत दीक्षा - भूतों को पूरी तरह से नियंत्रित करने की दीक्षा।

57. आज्ञा चक्र जागरण दीक्षा - दुर्लभ दृष्टि प्राप्त करने के लिए।

58. जनरल वैताल दीक्षा - वैताल पर नियंत्रण पाने के लिए।

59. विशेष वैताल दीक्षा - वैताल पर पूर्ण

नियंत्रण पाने के लिए।

60. पंचांगुली दीक्षा - हस्तरेखा में सिद्धि प्राप्त करने के लिए।

61. अनंग रति दीक्षा - सौंदर्य और युवा शक्ति प्राप्त करने के लिए।

62. कृष्णातव गुरु दीक्षा - विश्व के आध्यात्मिक गुरुओं की शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए।

63. हेरम्ब दीक्षा - भगवान गणपति को प्रसन्न करने के लिए।

64. हादी-कादी दीक्षा - नींद, भूख और प्यास पर नियंत्रण पाने के लिए।

65. आयुर्वेद दीक्षा - आयुर्वेद के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त करना।

66. वराहमिहिर दीक्षा - ज्योतिष के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त करना।

67. तंत्रोक्त गुरु दीक्षा - आध्यात्मिक गुरु (गुरु) से शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए।

68. गर्भ चयन दीक्षा - मनचाहा गर्भ पाने के लिए।

69. निखिलेश्वरानंद दीक्षा - सन्यासी की विशेष शक्तियाँ प्राप्त करने के लिए।

70. दीर्घायु दीक्षा - जीवन की एक बड़ी अवधि पाने के लिए।

71. आकाश गमन दीक्षा - इस दीक्षा से

आत्मा आकाश में भ्रमण करती है।

72. निर्बीज दीक्षा - जीवन, मृत्यु और कर्म की बेड़ियों को समाप्त करने के लिए।

73. क्रिया योग दीक्षा - जीव (आत्मा) और ब्रह्मा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

74. सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा - सिद्धाश्रम में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त करती है।

75. अप्सरा दीक्षा - जीवन में हर प्रकार की सुख-समृद्धि पाने के लिए।

76. षोडसी दीक्षा - सोलह कलाओं "त्रिपुर सुंदरी" साधना की प्राप्ति के लिए दीक्षा।

77. ब्रह्मानंद दीक्षा - ब्रह्मांड के अनंत रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

78. पाशुपतेय दीक्षा - स्वयं को भगवान शिव से मिलाना।

79. कपिला योगिनी दीक्षा - कपिला योगिनी पर नियंत्रण पाने के लिए।

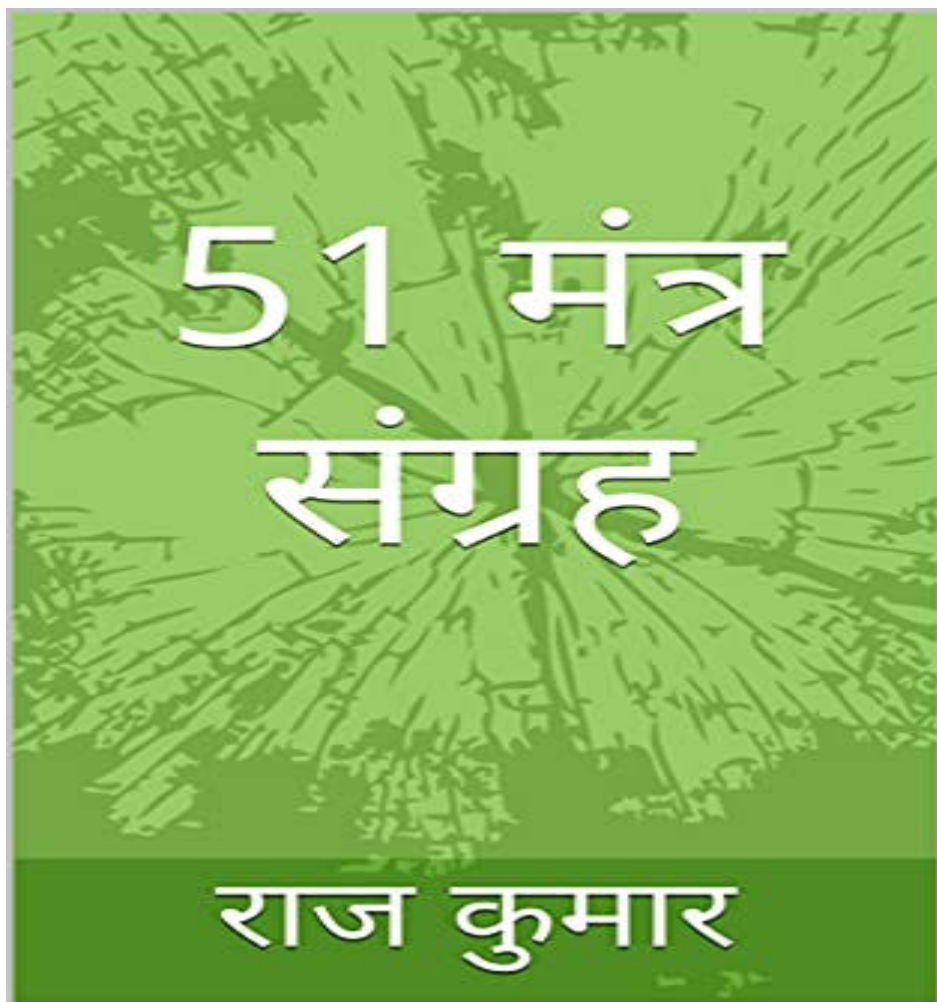
80. गणपति दीक्षा - भगवान गणपति को प्रसन्न करने और उनका विशेष आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए।

81. वाग्देवी दीक्षा - गहराई से बोलने की क्षमता प्राप्त करना।

वास्तव में यह अच्छे भाग्य से ही होता है कि व्यक्ति दीक्षा प्राप्त करने में सक्षम होता है, और उसके निर्देशों का पालन करके अपने गुरु के करीब आने की प्रक्रिया शुरू की जाती है।

किसी भी मन्त्र सिद्धि के लिए अपने गुरु , इष्ट और अपने ऊपर विश्वास करना जरूरी हैं बिना विश्वास और श्रद्धा के मन्त्र सिद्धि संभव नहीं हैं ।

अन्य ई बुक



जीवन में उपयोगी 51 मंत्र का संग्रह
प्राप्त करें | इस पुस्तक जीवन में
उपयोगी 51 मन्त्रों का संग्रह हैं| इन मन्त्रों
का उपयोग करके जीवन में आ रहे

समस्याओं को दूर करके जीवन को सुगम
बनाया जा सकता है ।

इस पुस्तक को पढ़ने के लिए

Visit :

<https://www.amazon.in/dp/B095J3TKBB/>

51 मंत्र संग्रह

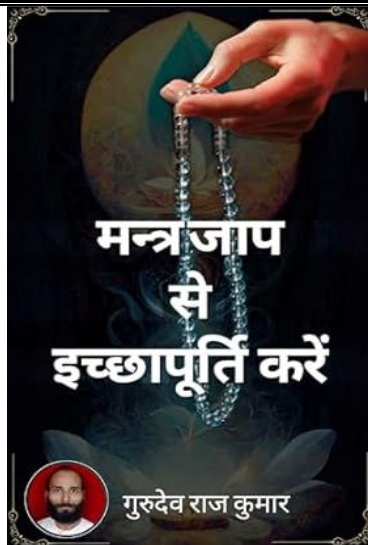
राज कुमार

संक्षिप्त श्री राम कथा

राज कुमार

<https://amzn.to/3Qi2gmk>

[Qi2gmk](https://amzn.to/3Qi2gmk)

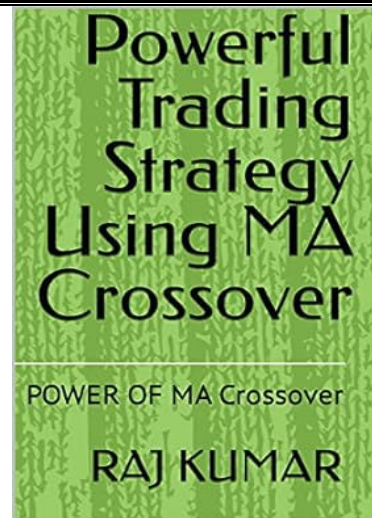


<https://amzn.to/3xSIEyK>

[xSIEyK](https://amzn.to/3xSIEyK)

<https://amzn.to/44iWLts>

[iWLts](https://amzn.to/44iWLts)



<https://amzn.to/4b8eHZH>

[8eHZH](https://amzn.to/4b8eHZH)

जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए मंत्रों का जाप करें और अपने जीवन को खुशहाल बनाएं।

मंत्र कभी विफल नहीं होता, मंत्र हमेशा
आपके लक्ष्य के लिए काम करता है जब
तक कि लक्ष्य पूरा न हो जाए।



राज कुमार

अक्षर मन्त्र तन्त्र यन्त्र